Mahila college, Balmianagar, Date-12/02/24
Deptt of Psychology
Social
कुसुम कुमारी
B.A. III (Hons)
Group-A

Topic

① Relation of Social Psychology with other Sciences

समाज मनोविज्ञान का सम्बन्ध अन्य विज्ञानों से पाते हैं, इसका सम्बन्ध इतने तक ही नहीं है बल्कि इसका सम्बन्ध मनोविज्ञान की अन्य दूसरी शाखाओं जैसे - सामान्य मनोविज्ञान तथा व्यक्तित्व का मनोविज्ञान से भी है।

✓ Relationship between Social Psychology and General Psychology

समाज मनोविज्ञान का सम्बन्ध सामान्य मनोविज्ञान से काफी घनिष्ठ है। सामान्य मनोविज्ञान में मनोवैज्ञानिक व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन प्रयोगशाला में करके निश्चित करने में रुचि रखते हैं। प्रयोगशाला में प्रशिक्षण करने की कोशिश करता है। प्रयोगशाला में अपनाई जानेवाली विधियाँ जिससे अध्ययन में सुविधा होती है का अनुसरण करके समाज मनोविज्ञान के अन्तर्गत व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार को जानने और विकसित करने में मदद लिया जाता है। प्रेरणा, प्रत्यक्षण एवं सीखना के क्षेत्र में प्रतिपादित नियम-२ प्रकार के नियमों से यह समझाने में मदद मिलती है कि व्यक्ति अपना सामाजिक लक्ष्य कैसे निर्धारित करता है, यह किस प्रकार दूसरों व्यक्ति एवं घटनाओं का प्रत्यक्षण करता है, वह किस प्रकार सामाजिक व्यवहारों को सीखता है, किस प्रकार से व्यक्ति की जरूरतें जन्मजात आवश्यकताएँ सामाजिक प्रभावों द्वारा एक खास दिशा में परिवर्तित होती हैं इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि समाज मनोविज्ञान तथा सामान्य मनोविज्ञान में काफी समानता है।

इस समानता के बावजूद इसमें कुछ असमानता भी है। मानव व्यवहार के कुछ पहलू ऐसे हैं जिनका अध्ययन सामाजिक प्रभावों से दूर रहकर ही सही अर्थों में किया जा सकता है। जैसे - स्मृति कल्पना आदि का अध्ययन।

✓ Relationship between social psychology and the psychology of Personality :—

समाज मनोविज्ञान तथा व्यक्तित्व का मनोविज्ञान दोनों का ही केन्द्र बिन्दु एक ही है यानी किसी व्यक्ति विशेष के व्यवहार का अध्ययन करना। मेयर्स (1988) के अनुसार इन दोनों के बीच घनिष्ठता इतनी अधिक है कि अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ (A.P.A) भी इन दोनों को अलग करने में असमर्थ रहा। इसी कारण से इन दोनों शाखाओं

शाखाओं में लिखे जानेवाले शोध अध्ययन का प्रकाशन भी जर्नल (Journal) में किया जाता है। जैसे Journal of Personality and Social Psychology, Personality and Social Psychology Bulletin. इन

इन समानताओं के बावजूद भी मनोविज्ञान की इन दोनों शाखाओं में इस प्रकार अंतर किया गया है।

समाज मनोविज्ञान का इतिहास काफी छोटा है जबकि व्यक्तित्व मनोविज्ञान का इतिहास अधिक पुराना है।

एक व्यक्तित्व मनोवैज्ञानिक यह जानना चाहते हैं कि क्यों एक व्यक्ति दूसरे के अपेक्षा अधिक आक्रमणशील होता है, एक ही परिस्थिति में अलग-2 का व्यवहार करता है आदि। वहीं समाज मनोवैज्ञानिक का ध्यान इस ओर भी रहता है कि व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को निष्ठुर या दयालु बना देती हैं।

Relationship between Social Psychology and Sociology

समाजमनोविज्ञान अपनी विषयवस्तु का वैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए समाजशास्त्र और मनोविज्ञान दोनों का सहारा लेता है। Fisher (1982) ने समाजशास्त्र और मनोविज्ञान दोनों को समाज मनोविज्ञान का उपविषय माना है। एक समाजशास्त्री विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न-2 तरह के अध्ययन कर समाज मनोविज्ञान को उनके स्वरूप के बारे में विशेष रूप से वैज्ञानिक जानकारी प्रदान करते हैं। जिसका उपयोग करके समाज मनोवैज्ञानिक उन विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन करते हैं। इस तरह से समाजशास्त्र समाजमनोविज्ञान को अपनी विषय वस्तु समझने में मदद करता है। समाजशास्त्र जिन सामाजिक संबंधों, अन्तःक्रियाओं आदि का अध्ययन करता है उनका कोई न कोई मनोवैज्ञानिक आधार होता है। मनोविज्ञान उन मनोवैज्ञानिक आधार की विस्तृत व्याख्या कर समाज~~शास्त्र~~ को अपनी विषय-वस्तु को समझने में मदद करता है। Krech & Crutchfield (1948) ने कहा है " समाज मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रियों को उनके द्वारा किये गये शोधों के आधार पर और उनकी विचारधाराओं के सामान्य निष्कर्षों के आधार पर अलग करने का प्रयास असफल ही होगा " इन समानताओं के बावजूद इनमें कुछ अन्तर भी है जो निम्न प्रकार से है।

समाजशास्त्र के अध्ययन की विषयवस्तु व्यापक समाज होता है जबकि समाजमनोविज्ञान की समाज में रहनेवाले व्यक्तियों के व्यवहार एवं भिन्न-2 तरह की अन्तः क्रियाएँ। समाज मनोवैज्ञानिक व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करने के लिए प्रायः प्रयोगात्मक विधि का उपयोग करते हैं परन्तु समाजशास्त्री बाहें विधियां तथा सहसम्बन्धात्मक विधि के सहारे समस्याओं का अध्ययन करते हैं।

✓ Relationship between Social Psychology and Anthropology.

समाजमनोविज्ञान का सम्बन्ध मानवशास्त्र (Anthropology) से भी है। मानवशास्त्र में मानव जीवन के मूलतः तीन पक्षों के अध्ययन पर अधिक बल डाला जाता है - शारीरिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक। ये तीनों पक्ष ऐसे हैं जिनपर भिन्न-2 तरह के मनोवैज्ञानिक प्रभाव स्पष्ट रूप से पड़ते हैं।

Linton (1956) के अनुसार Anthropology की दो शाखाओं Physical and Cultural Anthropology की विषय वस्तु के अध्ययन में समाज मनोविज्ञान एक वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। सांस्कृतिक मानवशास्त्री अपनी विषय-वस्तु के भिन्न-2 पक्षों का अध्ययन करके समाज मनोविज्ञान के लिए आँकड़ा प्रदान करते हैं। तो समाज मनोविज्ञानी भी सांस्कृतिक मानवशास्त्री से व्यक्तियों के स्वभाव के बारे में अध्ययन करके उसी समाज एवं संस्कृति के मूल तत्वों से अवगत कराते हैं।

इन समानताओं के बावजूद भी समाज मनोविज्ञान तथा मानवशास्त्र में अन्तर है।

मानवशास्त्र में आदिकालीन मानव तथा उनके शारीरिक सामाजिक तथा सांस्कृतिक पक्षों के अध्ययन पर बल डाला जाता है जबकि समाजमनोविज्ञान में व्यक्तियों के व्यवहारों एवं अनुभूतियों का अध्ययन सामाजिक परिस्थिति में किया जाता है।

समाजमनोविज्ञान में प्रयोगात्मक विधि के द्वारा ही व्यक्ति के सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है जबकि मानवशास्त्र में विषय-वस्तु का अध्ययन करने के लिए मानवशास्त्री को उस समुदाय में रहना पड़ता है और समुदाय में रहकर ही व्यक्तियों के रीति-रिवाजों, धर्म विश्वास आदि का प्रेक्षण करते हैं और उनका अभिलेख तैयार करते हैं।

(4)

Relationship between Social Psychology and Political

समाज मनोविज्ञान तथा राजनीतिशास्त्र का गहरा सम्बन्ध है। राजनीतिशास्त्र वह विज्ञान है जो राज्य एवं सरकार की आधारभूत स्थितियों, उसकी प्रकृति एवं विविध स्वरूप तथा विकास के समझने की कोशिश करता है अतः यह स्पष्ट है कि राजनीतिशास्त्र में व्यक्तियों की राजनैतिक गतिविधियों का विश्लेषण किया जाता है। इस तरह के विश्लेषण में समाज मनोविज्ञान काफी मदद करता है एक समाज मनोवैज्ञानिक अपनी विभिन्न प्रणालियों एवं प्रविधियों द्वारा राज्य के नागरिकों की मनोवृत्ति सामाजिक प्रत्यक्षण पूर्वाग्रह आदि का अध्ययन कर उनकी सही-2 मनोदशा की अवस्था को बतलाता है। समाज मनोवैज्ञानिक अध्ययन करके यह बतलाते हैं कि एक सफल नेता के क्या लक्षण होते हैं, उनके कौन-2 से शीलगुण हैं, नेतृत्व को कैसे प्रभावशाली बनाया जा सकता है, प्रचार को कैसे प्रभावकारी बनाया जा सकता है आदि।

इन सभी बातों की जानकारी होने से राज्य तथा सरकार दोनों को ही व्यक्तियों के राजनैतिक क्रिया कलापों के बारे में समझने में काफी मदद मिलती है।

समाज मनोविज्ञान को भी अनेक सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्तियों का अध्ययन करने के लिए Political Science पर निर्भर होना पड़ता है। राजनीतिशास्त्र समाज मनोविज्ञान को उन कारणों से परिचित कराता है जिनसे समाज में राजनैतिक तनाव, दंगे, गृह-युद्ध आदि होते हैं ये सारी घटनाएँ ऐसी हैं जिनसे व्यक्ति का सामाजिक जीवन प्रभावित होता है।

इन सम्बन्धों के बावजूद इनमें मौलिक अंतर भी है

(i) राजनीतिशास्त्र और समाजमनोविज्ञान का विषय क्षेत्र अलग-2 है राजनीतिशास्त्र राज्य तथा सरकार के भिन्न-2 रूपों आदि का अध्ययन करता है जबकि समाजमनोविज्ञान समाज में व्यक्तियों द्वारा की गई अन्तः क्रियाओं का अध्ययन करता है।

(ii) राजनीतिशास्त्र व्यक्ति के राजनैतिक क्रियाओं के बाह्य पक्ष पर अधिक बल डालता है लेकिन ~~समाजमनोविज्ञान~~ मनोवैज्ञानिक पक्ष पर कोई बल नहीं डालता है।

(iii) राजनीतिशास्त्र में व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन यथार्थ रूप से यानी जैसा है वैसा ही नहीं होता है जबकि समाजमनोविज्ञान में उसी रूप में की जाती है।

(5)

Relationship between Social Psychology and Economics

समाज मनोविज्ञान का सम्बन्ध अर्थशास्त्र के साथ काफी है। अर्थशास्त्र मनुष्य के सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण आर्थिक पहलू का अध्ययन करता है। व्यक्ति की आवश्यकता, माँग, उपयोगिता, संतुष्टि आदि सभी मानसिक क्रियाएँ हैं। जिनके मनोवैज्ञानिक आधार को समझे बिना उनसे सम्बन्धित नियमों एवं सिद्धांतों का प्रतिपादन करना संभव नहीं है। अर्थशास्त्र को अपनी समस्याओं को सही ढंग से समझने तथा उसका अध्ययन करने के लिए समाज मनोविज्ञान पर आधारित रहना पड़ता है दूसरी ओर इन आर्थिक क्रियाओं द्वारा व्यक्ति का सामाजिक व्यवहार काफी प्रभावित होता है व्यक्ति का सामाजिक जीवन उन क्रियाओं द्वारा एक हद तक प्रभावित होता है कि स्पष्ट रूप से समाज मे सामाजिक आर्थिक भिन्नता देखने को मिलती है इस तरह की भिन्नताओं का वैज्ञानिक अध्ययन समाज मनोविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है इस प्रकार से अर्थशास्त्र और समाजमनोविज्ञान एक दूसरे को अपने-2 अध्ययन क्षेत्रों में मदद करके एक विशेष सम्बन्ध कायम करते हैं। इन सम्बन्धों के बावजूद इन दोनों विषयों के बीच कुछ मौलिक अंतर भी बताया गया है

① अर्थशास्त्र का अध्ययन विषय, आवश्यकता, मूल्य, आपूर्ति, माँग, उत्पादन, मजदूरी, लगान आदि है जबकि समाजमनोविज्ञान का अध्ययन विषय व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहारों के भिन्न-2 पहलुओं जैसे - मनोवृत्ति, पूर्वाग्रह, समूह, फैशन, प्रचार, सुझाव आदि है।

② अर्थशास्त्र अपनी विषय-वस्तु का अध्ययन करने के लिए मूलतः निगमन विधि (deductive method) और आगमन विधि (Inductive method) के द्वारा प्रयोग करता है जबकि समाज मनोविज्ञान मूलतः प्रयोगात्मक विधि, सर्वे विधि, व्यक्ति इतिहास विधि आदि का उपयोग करता है।

③ अर्थशास्त्र के अध्ययन का दृष्टिकोण मूल रूप से आर्थिक होता है जबकि समाज मनोविज्ञान के अध्ययन का दृष्टिकोण सामाजिक मनोवैज्ञानिक होता है

X X X